फाँसी से तीन दिन पूर्व शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव द्वारा पंजाब के गवर्नर को लिखा गया पत्र

''हमें फाँसी देने के स्थान पर गोली से उड़ा दिया जाए।''

सेवा में,

गवर्नर पंजाब,

शिमला।

श्री मान,

उचित सज़्मान सहित, हम निम्नलिखित बातें आपके ध्यान में लाना चाहते हैं। लाहौर साजिश केस के बारे में भारत में अंग्रेजी सरकार के प्रमुख, वायसराय के विशेष हुक्म के मुताबिक, हमारे केस की सुनवाई के लिए खास अदालत (ट्रिब्यूनल) स्थापित की गई थी, जिसने हमें 7 अक्तूबर 1930 को फाँसी देने की सजा सुनाई थी। हमारे विरूद्ध सबसे बड़ा दोष, इंगलैंड के राजा सम्राट जार्ज पाँचवे के विरूद्ध जंग छेड़ने का था।

यह निर्णय सुनाते समय अदालत ने दो बातें निर्धारित की थी। पहली यह कि अंग्रेजों तथा भारतीय जनता के मध्य एक जंग चल रही है। दूसरी यह कि हमने इस जंग में निश्चित रूप में हिस्सा लिया है। जिसके कारण हम जंगी कैदी हैं।

वैसे दूसरी बात की व्याज़्या करते हुए एक हद तक चत्तुरता से काम लिया गया है, जिसके कारण इसके खिलाफ बोलना आवश्यक हो गया है, परन्तु फिर भी हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि हमारे बारे में ऐसा कह कर हमारा सज़्मान किया गया है।

जंग वाली हालत

जहाँ तक पूर्व निर्धारित की गई बात का सज़्बंध है, उस पर हम थोड़े विस्तार से प्रकाश डालना चाहेंगे। प्रत्यक्ष रूप में ऐसी कोई लड़ाई छिड़ी हुई नज़र नहीं आती। फिर भी इसके लज़्ज़ी अर्थों में हम इस व्याज़्या को मानने के लिए तैयार हैं। परन्तु हम इसे और विस्तार से बताना चाहेंगे, ताकि हमें ठीक तरह से समझा जा सके। हम यह ऐलान करते हैं कि एक युद्ध चल रहा है और यह तब तक चलता रहेगा जब तक चंद ताकतवार लोग, भारतीय जनता व मेहनतकश लोगों को तथा उनके आमदन के स्त्रोतों को लूटते रहेंगे। वे लुटेरे चाहे निरोल अंग्रेज पूँजीपति हों या निरोल भारतीय पूँजीपति या फिर दोनों मिले हुए हों, वे जनता का खून चूसने के लिए निरोल भारतीय नौकरशाही या साझी मिली-जुली नौकरशाही की मशीन का उपयोग करें। इस सब कुछ से हमें कोई फर्क नहीं पड़ेगा। यदि आपकी सरकार, छोटी छोटी सहूलतें देकर या समझौता करके भारतीय नेताओं व इस समाज के उच्च वर्ग के मुखिओं को अपने साथ जोड़ने में कामयाब हो जाती है, और कुछ समय के लिए जनता की ताकत को मद्धम कर देती है, तो भी इस हालत में कोई फर्क नहीं आएगा। इस बात की भी कोई चिंता नहीं है कि एक बार फिर भारतीय आंदोलन के प्रमुख दस्ते व इनकलाबी पार्टियों को, लड़ाई जब अपने यौवन पर थी तब उन्हें धोखा दिया गया। इसका भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा, यदि भारतीय नेता, जिनके हम जाति तौर पर इस कारण आभारी हैं कि उन्होंने हमारे लिए हमदर्दी की अच्छी भावनाऐं प्रकट की हैं, उनके मन में बदला लेने वाली भावना इतनी घर कर चुकी है कि उन्होंने शांति समझौता वार्ता में बेघर व बेसहारा स्त्री राजनैतिक कार्यकर्ताओं का भोग तक नहीं डाला। क्योंकि उन्हें इनकलाबी पार्टी का सदस्य समझा गया है। और नेताओं की नज़र में इनकलाबी पार्टी उनकी शेख चिल्ली वाली (कल्पित)अहिंसा की विरोधी है। वैसे यह अहिंसा अब एक खोखली बात बन चुकी है। ये भारत की वे बहादुर सुपुत्रियां हैं जिनकी अपनी कुर्बानी तो बेमिसाल है ही साथ ही उन्होंने अपने पतियों व भाईयों को कुर्बान गाह की भेंट चढ़ाया है या बलि के लिए उन्हें स्वयं विदा किया है। इन बहादुर देवियों ने अपनी जान सहित, हर प्यारी व करीबी वस्तु को कुर्बानी के लिए भेंट किया है। और तुज़्हारी सरकार ने इन्हें विद्रोही करार दिया है। यदि तुज़्हारे एजेंट इतने गिर गए हैं कि उन्होंने मनघड़त कहानियां घड़ कर इनकी व इनकी पार्टी के सज़्मान को ठेस पहुँचाने का प्रयास किया है। तो भी यह युद्ध जारी रहेगा।

जंग के तरीके का चुनाव आपने करना है

हो सकता है कि यह लड़ाई भिन्न-भिन्न पड़ावों में भिन्न-भिन्न रूप धारे। किसी समय में यह लड़ाई प्रकट रूप में हो, कभी खुफिया, कभी निरोल आंदोलनकारी या कभी यह इतनी भयानक हो कि जीवन व मृत्यू की बाज़ी लग जाए। परन्तु यह कौनसा रूप धारती है, खूनी या फिर थोड़ा शांतिपूर्ण, इसका चयन आप पर निर्भर है। सो आप इसके रूप का चयन अपनी मर्जी के मुताबिक कर सकते हो। परन्तु यह जंग, इन छोटी छोटी बातों में पड़े बिना व फिज़ूल नैतिक सिद्धांतों में उलझे बिना लगातार चलती रहेगी।

जब तक समाजवादी लोक राज स्थापित नहीं हो जाता; तथा समाज का वर्तमान ढाँचा खत्म करके उसके स्थान पर सामाजिक खुशहाली पर आधारित नया सामाजिक ढाँचा नहीं तैयार हो जाता, तब तक हर किस्म की लूट-खसूट असंभव बना कर मनुष्यता व वास्तविकता पर स्थाई अमन की छाया नहीं होती, तब तक यह जंग नए जोश, और अधिक निडरता, बहादुरी व अटल ईरादों से लड़ी जाती रहेगी। निकट भविष्य में अंतिम युद्ध लड़ा जाएगा तथा वह निर्णात्मक होगा।

साम्राज्यवादी व पूँजीवादी लूट मात्र कुछ दिनों की मेहमान है। यह जंग न तो हमारे साथ प्रारंभ हुई थी और न ही हमारे जीवन के साथ खत्म होगी। यह तो एतिहासिक कारणों व इर्द-गिर्द फैले हालातों का आवश्यक परिणाम है। हमारी छोटी सी कुर्बानी तो बस इस एतिहासिक लड़ी की एक कड़ी है, जिस को जेतिन दास की बेमिसाल कुर्बानी ने, शहीद भगवती चरण जी की अति भयानक परन्तु पवित्र व महान कुर्बानी ने तथा हमारे महबूब जरनल आज़ाद की शानदार शहादत ने चार चाँद लगाए हैं।

फाँसी के स्थान पर गोली

जहाँ तक हमारी किस्मत का प्रशन है, हम दृढ़ निश्चय के साथ कहना चाहते हैं कि आपने जब हमें फाँसी देने का हुक्म दिया है तो आप अवश्य ही इसे पूरा करेंगे। आपके हाथ में ताकत है और दुनिया में ताकत को हर हक हासिल है। हम जानते हैं कि आपके निश्चय को पूर्ण करने के लिए 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाला मुहावरा काम करता है। हमारे मुकद्दमे की सुनवाई इस बात की एक बढ़िया उदाहरण है। हम आपको यह बताना चाहते हैं कि आपकी ही एक अदालत के फैसले के अनुसार हमारे पर युद्ध छेड़ने का दोष है और इस कारण हम जंगी कैदी हैं। और इस कारण हम माँग करते हैं कि हमारे साथ जंगी कैदियों वाला सुलूक ही किया जाए। यानि की हमें फाँसी पर लटकाने के स्थान पर हमें गोली से उड़ाया जाए। अब यह सिद्ध करना आपका काम है कि जो आपकी अदालत ने कहा है; उसमें आपका पूरा विश्वास है।

सो हम नम्रता पूर्वक आपके समक्ष यह निवेदन करते हैं कि आप अपने फौजी विभाग को हुक्म दें कि हमें गोली से उड़ाने के लिए एक फौजी टोली भेज दें।

आपके,

भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव